

चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धिदर (CAGR) दर्ज की जाएगी।

- भारतीय मधुमक्खी पालन बाजार वर्ष 2024 तक 33,128 मिलियन रुपए तक पहुँचने की उम्मीद है, जो लगभग 12 प्रतिशत की CAGR से बढ़ रहा है।
- भारत छठा प्रमुख प्राकृतिक शहद निर्यातक देश है।
 - वर्ष 2019-20 के दौरान 633.82 करोड़ रुपए के प्राकृतिक शहद का रिकॉर्ड निर्यात किया गया जो कि 59,536.75 मीटरिक टन था। प्रमुख निर्यात गंतव्य संयुक्त राज्य अमेरिका, सऊदी अरब, कनाडा और कतर थे।

संबंधित पहल:

- 'मीठी क्रांति':
 - यह मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देने के लिये भारत सरकार की एक महत्वाकांक्षी पहल है, जिसे 'मधुमक्खी पालन' (Beekeeping) के नाम से जाना जाता है।
 - मीठी क्रांति को बढ़ावा देने हेतु सरकार द्वारा वर्ष 2020 में (कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय के तहत) राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं शहद मशिन शुरू किया गया।
 - राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन और शहद मशिन का लक्ष्य 5 बड़े क्षेत्रीय एवं 100 छोटे शहद व अन्य मधुमक्खी उत्पाद परीक्षण प्रयोगशालाएँ स्थापित करना है।
 - इनमें में से 3 विश्व स्तरीय अत्याधुनिक प्रयोगशालाएँ स्थापित की गई हैं, जबकि 25 छोटी प्रयोगशालाएँ स्थापित होने की प्रक्रिया में हैं।
- प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना:
 - भारत प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना के लिये मधुमक्खी पालकों को भी सहायता प्रदान कर रहा है।
 - देश में 1.25 लाख मीटरिक टन से अधिक शहद का उत्पादन किया जा रहा है, जिसमें से 60 हजार मीटरिक टन से अधिक प्राकृतिक शहद का निर्यात किया जाता है।
- वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाना:
 - घरेलू शहद की गुणवत्ता में सुधार लाने एवं वैश्विक बाजार को आकर्षित करने के लिये भारत सरकार के साथ-साथ राज्य सरकारें भी वैज्ञानिक तकनीकों के उपयोग के माध्यम से मधुमक्खी पालकों के क्षमता निर्माण पर सहयोग एवं ध्यान केंद्रित कर रही हैं।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा वगित वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. जीवों के निम्नलिखित प्रकारों पर विचार कीजिये: (2012)

1. चमगादड़
2. मधुमक्खी
3. पक्षी

उपर्युक्त में से कौन-सा/से परागणकारी है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (d)

व्याख्या:

- परागण एक पौधे के नर भाग से पौधे के मादा भाग में पराग का स्थानांतरण है, इस प्रकार यह नषिचन और बीज के उत्पादन को संभव बनाता है, यह प्रक्रिया सजीव कारकों या हवा द्वारा संपन्न होती है।
- परागणकारी प्रजातियों में कीड़े, पक्षी, मधुमक्खियाँ और चमगादड़ शामिल हैं, जबकि अन्य कारकों में पानी, हवा तथा यहाँ तक कि खुद पौधे (एक ही फूल के भीतर स्व-परागण) भी शामिल होते हैं। **अतः कथन 1, 2 और 3 सही हैं।**
- परागण अक्सर समान प्रकार की प्रजातियों के मध्य ही होता है परंतु जब यह विभिन्न प्रजातियों के बीच होता है तो यह प्रकृतियों में और पौधों के प्रजनन द्वारा संकर संतानों की उत्पत्ति कर सकता है।

स्रोत: द हिंदू

